SC

No. of printed pages: 2

[A-18]

SARDAR PATEL UNIVERSITY
SY BA (External) Examination
Saturday
28th February 2015
2.30 pm - 5.30 pm
HIN-200 - Hindi Compulsory (For Non-English Stream)
अनिवार्य हिन्दीः अंग्रेजी रहित पाठ्यक्रम

कुल गुण : १००

नोटः हिन्दी में शिरोरेखा बाँधना अनिवार्य है ।

प्र.१ (१६)

(क) ससंदर्भ व्याख्या लिखिए ।

कितने दिन से वृक्ष दे रहे संकेतो, झुक आई डाली,
कितने दिन से खड़ा अकेला अपने बागो का यह माली ।।
आज सिद्ध करना ही होगा, नहीं जवाहर कभी अकेला,
आज सिद्ध करना ही होगा, आ पहुँची प्रयाण की वेला ।।
चलो सजाओ सैन्य समय की भरपाई के दिन आए हैं ।।
आज प्राण देने के युग की तरुणाई के दिन आए है ।।

अथवा

(क) ''लघुता मे प्रभुता मिलै, प्रभुता ते प्रभु दूरि ।
चींटी लै सक्कर चली, हाथी के सिर घूरि ।।''

(ख) ''जीवन को उठाने वाले जो नियम हैं वे जब आत्मा में बसने लगते हैं तभी धर्म का सच्चा आरम्भ मानना चाहिए ।''

अथवा

(ख) ''हमारी समझ में यह प्रश्न की रचनाकार बड़ा होता हैं या समीक्षक ।''

प्र.२ 'नाश का त्यौहार कविता में व्यक्त कवि के विचार स्पष्ट कीजिए ।' (१६)

अथवा

प्र.२ 'संध्या सुंदरी' कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए ।

प्र.३ 'संस्कृति का स्वरुप' निबंध की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । (१६)

अथवा

प्र.३ 'हिम-प्रलय' निबंध में व्यक्त लेखक के विचार स्पष्ट कीजिए ।

प्र.४

(क) गुजराती में से हिन्दी में अनुवाद कीजिए । (०८)

મનુષ્યને તેની સફળતાઓ જ હંમેશા વેગ આપતી નથી પરંતુ નિષ્ફળતાઓ પણ તેના વેગમાં પ્રેરણા ઉન્નતિમાં ઉત્તેજના અને વૃદ્ધિમાં મદદગાર બની પ્રગટ થાય છે. એટલે સુધી કે જીવનમાં સફળ થતા પહેલા જેમને આપણે ભુલો સમજી બેસીએ છીએ તે આપણી સફળતાની ઘોષણા કરી આપણને સંપૂર્ણ સફળ બનાવી દે છે. મહાપુરૂષોએ કોઇ કોઇ વાર એવી ભૂલો કરી છે કે, પહેલા તેમને માટે તેઓ રડ્યા છે, પરંતુ ભૂલો એ તેમના જીવનને અમર બનાવવાની પ્રેરણા આપી છે. એનો અર્થ એ કે દરેક અસફળતા, સફળતાની સીડી બની જાય છે. માણસોની શક્તિને પ્રદીપ્ત કરનાર બે તત્ત્વો છે. એક લક્ષ્ય પ્રત્યે ઝંખના અને બીજુ સ્પર્ધા. જીવનમાં જો આ બે વસ્તુઓ ના હોય તો શક્તિશાળી માણસ પણ પોતાની શક્તિનો ઉપયોગ પૂરેપૂરો નહિ કરી શકે.

(ख) 'मीडिया की भाषा' के संदर्भ में लिखिए । (०८)

प्र.५

(क) सार संक्षेप लिखिए । (०८)

साहित्य अपने युग का भावात्मक तथा रागात्मक चित्र प्रस्तुत करता है जो तत्कालीन समाज को दिशा प्रदान करता है । प्रत्येक युग में दो प्रकार से साहित्य का सृजन होता है । एक सामाजिक साहित्य है, जो युग की अनेक समस्याओं का आकलन और मूल्यांकन युग विशेष की प्रचलित मान्यताओं और विचार सारणियों से करता है । ऐसा साहित्य समाज का तत्कालीन दर्पण तो बन जाता है किन्तु; उन समस्याओं का हल प्रस्तुत हो जाने पर उस साहित्य का मूल्य घट जाता है । ऐसा साहित्य कुछ वर्षो तक युग की परिस्थितियों की माँग का सिन्दूर बना रहता है, किन्तु कालान्तर में परिस्थितियों के बदलने पर वह नष्ट हो जाता है । शाश्वत् साहित्य अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हुए युग-युग की वस्तु बन जाता है । वह किसी काल की सीमा रेखा से बँधा नहीं होता, अधिकतर ऐसा साहित्य अपने युग में उतना सन्मान नहीं पाता, जितना भविष्य में ।

(ख) पल्लवन कीजिए । (०८)

नर और नारी जनमते और मरते हैं, परन्तु राष्ट्र सदा अमर रहता है ।

(ग) निम्नलिखित कहावतों का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए । (१०)

१) जैसा राजा वैसी प्रजा
२) अन्धो में काना राजा
३) जब तक साँस तब तक आस
४) जिसकी लाठी उसकी भैंस
५) एक पंथ दो काज
६) ऊँची दुकान फीका पकवान
७) अधजल गगरी छलकत जाय
८) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे
९) घर की मुर्गी दाल बराबर
१०) एक तो करेला दूसरा नीम चढ़ा

(घ) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए । (१०)

१) श्री गणेश करना
२) खून पसीना एक करना
३) घर बसाना
४) गुस्सा पीना
५) उलटी गंगा बहाना
६) अपने पाँव पर कुल्हाडी मारना
७) खरी खोटी सुनाना
८) किताब का कीड़ा होना
९) चल बसना
१०) आसमान टूट पडना

☺☺☺☺☺